केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			कुल प्राप्तांक शब्दों में		कुल प्राप्तांक अंकों में
16					

78½ + ½ = 79

79

80

श्रीमती मीनाक्षी सोनी
उच्च माध्यमिक शिक्षक
V.No.-9510270
शा कन्या उ मा.वि झाबुआ

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्राः नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
श्रीमती राजू डामोर वरिष्ठ अध्यापक प. नं. JB-H-015 शा. उ. मा. वि. भगोर	नीरज (उ.मा.शि.) शा. क. उ. मा. वि. राजा प. क्र. H.S.S. HIN - 24008 मोब. - 8085877785

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 1

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) असत्य

(vi) सत्य

③ [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 3 के अंक   कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 2

(i) जिठौत — (ग) जेठ का पुत्र

(ii) बिम्ब — (क) शब्द चित्र

(iii) जूझ — (घ) केशव प्रथम वीर

(iv) अतीत मे दबे पाँव — (ज) यात्रा वृत्तांत

(v) फ्रीलांसर पत्रकार — (ख) अलग - अलग अखबारों में लेखन

(vi) समाचार लेखन की शैली — (च) उल्टा पिरामिड

(vii) कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स — (झ) धार्मिक अनुष्ठान का स्थान

B
S
E

4 | | + | | = | |

पृष्ठ 4

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -3

(i) समाचार लेखन के छः ककार :-

① क्या ④ कैसे

② कौन ⑤ कहाँ

③ कब ⑥ क्यों

(ii) गद्य की प्रमुख विधाएँ

① नाटक

② एकांकी

③ कहानी

④ उपन्यास

(iii) रघुवीर सहाय दूसरे तार सप्तक के कवि हैं।

(iv) सिंधु सभ्यता की ईंटों की बनावट का अनुपात 4 : 2 : 1 था।

(v) शब्द-शक्ति :- शब्दों और अर्थ का संबंध ही शब्द-शक्ति कहलाता है। अर्थात् जहाँ शब्दों के अर्थों का बोध हो वहाँ शब्द-शक्ति होती है।

तीन प्रकार : अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

5

प्रश्न क्र.

(vi) 'आम के आम गुठलियों के दाम' का अर्थ है :- दुगना लाभ होना ।

(vii) दुर्मिल सवैया छंद का दूसरा नाम चन्द्रकला है।

प्रश्नक्रमांक - 4

(i) (अ) निशा निमंत्रण

(ii) (ब) कैमरे मे बंद अपाहिज

(iii) (अ) आठ

(iv) (स) भी

(v) (द) नीले शंख जैसा

(vi) (अ) संस्मरण

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 5

(i) अवधी

(ii) अखबार की

(iii) पतंग

(iv) स्मृति की रेखाएँ

(v) आलम्बन

(vi) आनन्द रतन यादव

⑦ [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 7 के अंक | कुल अंक

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक – 6

(i) महादेवी वर्मा विदुषी थी ।

(ii) श्री कृष्ण के अनेक नाम है ।

है पर ... क्योंकि वाक्य बहुवचन का है

प्रश्नक्रमांक – 7 अथवा

इण्टरनेट इण्टरनेट पत्रकारिता : जब पत्रकार, समाचार, खबरों एवं जानकारियाँ इण्टरनेट के माध्यम से प्रस्तुत करता है, तो इण्टरनेट पत्रकारिता कहते है ।

उदाहरण : दैनिक भास्कर का समाचार पत्र आज इण्टरनेट पर भी उपलब्ध है । अर्थात् इण्टरनेट पत्रकारिता का उपयोग कर रहा है ।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक -8 अथवा

शब्द-गुण :-

काव्य मे जिन तत्वो के माध्यम से रस का उत्सर्ग होता है। शब्द-गुण कहलाते है। शब्द-गुण काव्य में निहित में रस की अनुभूति हमारे हृदय को करवाते है। शब्द-गुण को काव्य गुण भी कहा जाता है।

शब्द-गुण के तीन प्रकार है:-

1. प्रसाद गुण
2. ओज गुण
3. माधुर्य गुण

(9) + पृष्ठ 9 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 9

कवि उमाशंकर जोशी जी अपनी कविता 'छोटा मेरा खेत' में 'अंधड़' और 'बीज' शब्द का प्रयोग किया है।
वे कवि-कर्म को किसान-कर्म के समान बताते हुए कहते हैं कि, जिस तरह आँधी (अंधड़) आती है, और किसान के खेत मे 'बीज' बोये जाते है। उसी तरह कवि में मन में 'भावना' रूपी आँधी आती है, और उसे लिखने की प्रेरणा देती है तो कवि अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए 'शब्द' रूपी बीज बोता है। और कविता की रचना करता है।

P.T.O.

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 10 = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक -10

रीतिकालीन कविता की विशेषताएँ :-

① श्रृंगार रस की प्रधानता :- अपने राज्य के राजाओं को प्रसन्न करने हेतु कवियों ने नायक-नायिका के प्रेम का वर्णन करते हुए श्रृंगार रस से पूर्ण रचनाओं की कृति की। इसी कारण रीतिकाल को श्रृंगार काल भी कहा जाता है।

② कलापक्ष की कृतियों पर अधिक बल।

③ मुक्तकाव्य काव्य की रचनाएँ में मुक्तछंद से परिपूर्ण।

रीतिकाल के रचनाकार व उनकी रचनाएँ :-

① बिहारी - 'बिहारी सतसई'।

② भूषण - 'छत्रसाल दशक'।

BSE

(11) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 11 के अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक -11 अथवा

लेखक जैनेन्द्र कुमार अपने निबंध 'बाजार दर्शन' में बाजार के जादू का वर्णन करते हैं। उनके अनुसार बाजार का जादू वो है, ~~जिसके यह चढ़ने पर~~ जिसके चढ़ने पर व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को भूलकर अनेक गैर-ज़रूरी वस्तुएँ खरीदता है। बाजार का आकर्षक सौन्दर्य उसे मन्त्र-मुग्ध कर देता है, वह सोचता है, "ये भी ले लूँ, वो भी ले लूँ", और फिर परिणाम रूप वह अपनी 'पर्चेसिंग-पावर' अर्थात क्रय शक्ति दिखाने लगता है। इस कारण से बाजार का बाज़ारूपन बढ़ता है। लेकिन जादू उतरने पर उसे अहसास होता है कि, वस्तुएँ के उपयोग में कम और जीवन में खलल अर्थात बाधा उत्पन्न करती हैं। यही बाज़ार का जादू है।

P.T.O

B S E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक -12 अथवा

नाटक	एकांकी
① नाटक में अधिकारिक कथाओं के अलावा अन्य सहायक गौण कथाएँ भी होती है।	① एकांकी में एक घटना या एक कथा का वर्णन होता है।
② नाटक में अनेक अंक होते है	② एकांकी में एक अंक होता है।
③ नाटक में पात्रो की संख्या अधिक होती है और नाटक का आकार बड़ा होता है	③ एकांकी में पात्रो की संख्या सीमीत होती है और इसका आकार लघु होता है
उदाहरण : चन्द्रगुप्त (जयशंकर पसाद)	उदाहरण : एक घूँट (जयशंकार प्रसाद)

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

B S E

प्रश्नक्रमांक -13

मनोहर श्याम जोशी द्वारा लिखी गई 'सिल्वर वैडिंग' के आधार यशोधर बाबू (वाय. डी. पंत) की निम्नलिखित ~~व्यक्ति~~ व्यक्तित्वगत विशेषताएँ है।

① परम्परावादी और सिद्धान्तवादी :- यशोधर बाबू बचपन से संस्कारों को पालन करते थे। फिर दिल्ली पर भी उन्हे 'किशनदा' मिले, जिन्होने यशोधर बाबू को जीवन संबंधित अनेक सिद्धान्त बताए और परम्परा का पालन करना सिखाया।

② सरल व सादगीभरा जीवन : वे आधुनिक समाज के चोंचलों को 'सम हाव इम्प्रोपर' मानते थे। और अपनी पुरानी पीढ़ी के अनुसार जीवन व्यतीत करते थे। वे सीधे-साधे कपड़े पहनते थे, बिड़ला मंदिर जाते थे। सब्जी व दूध लाते थे। व सरल जीवन जीते थे।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक-14 अथवा

विरोधाभास अलंकार :

काव्य में जहाँ वास्तिव वास्तविक विरोध न होने पर भी, विरोध होने का आभास हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

उदाहरण : "ज्यों-ज्यों बूड़े श्याम रंग, त्यों त्यों उज्ज्वलू होइ"॥

प्रस्तुत पंक्तियों में कहा गया है कि काले रंग में डुबकी लगाने से उज्ज्वल होते है अर्थात यहा विरोध उत्पन्न हो रहा है, लेकिन वास्तव में श्याम रंग का अर्थ कृष्णभक्ति से है, जिस कारण मनुष्य और पवित्र (उज्ज्वल) हो जाता है।

प्रश्न क्र.

(15)

प्रश्नक्रमांक - 5 अथवा

रूबाइयाँ छंद :

~~रूबा~~ रूबाईयाँ एक उर्दू-फारसी का ~~*~~ छंद शैली है, जिसके पहले, दूसरे और ~~चौथ~~ चौथे चरण में तुकांत होता है, तथा तीसरा चरण स्वतंत्र होता है। इसमें चार चरण होते हैं।

उदाहरण :

आँगन में लिये चाँद के टुकड़े को खड़ी,
हाथों पर झुलाती है उसे गोद भरी,
रह-रहकर जो हवा में लोका देती है,
गूँज उठती है एक खिलखिलाते बच्चे की हँसी ॥

प्रस्तुत पंक्ति में फिराक गोरखपुरी द्वारा लिखित एक रूबाई छंद है जिसमें ममत्व का वर्णन हुआ है।

16 + =

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक -16 अथवा

पिताजी एवं पुत्र के मध्य संवाद :

पुत्र : पिताजी, मेरी 25 फरवरी से वार्षिक परीक्षा है, मुझे कैसे तैयारी करने हेतु कुछ सलाह दीजिए।

पिताजी : ठीक है। पुत्र सोहन, तुम्हें सबसे पहले अपना पाठ्यक्रम पूर्ण करना होगा। कि जैसा की पहला विषय हिन्दी का है उसी के अनुसार तुम अपनी दिनचर्या निर्धारित करो व अन्य विषय भी पढ़ते रहो।

पुत्र : पिताजी मैंने हिन्दी का पाठ्यक्रम पूर्ण कर लिया और अन्य विषय का भी लगभग होने वाला है।

पिताजी : शाबाश पुत्र! अब तुमको पुनः अभ्यास पर ध्यान देना चाहिए और से आदर्श प्रश्न-पत्र हल करना चाहिए।

पुत्र : ठीक है पिताजी। आज ही मैं बाज़ार से खरीद लूँगा और पूरी एकाग्रता से हल करूँगा।

प्रश्न क्र.

पिताजी : बेटा मै तुमको कुछ और बात चाहुँगा जो तुमको परीक्षा देते वक्त ध्यान रखना है।

पुत्र : जी पिताश्री! मैं अभी कागज - कलम लेकर आता हूँ।

पिताजी : तो सुनो तुम्हे परीक्षा के दौरान पुरा प्रश्न-पत्र ध्यानपूर्वक पढ़ना है, फिर तुम्हारी सद्बुद्धि के अनुसार प्रश्न का चयन करके उत्तर लिखना और समय का भी ठीक ध्यान रखना है। तुमको निश्चिंत होकर परीक्षा कक्ष मै जाना है। मैं तुम्हारे उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

पुत्र : धन्यवाद पिताश्री! मैं आपकी बताई बातों का पालन करूँगा।

18

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक-17

(i) शीर्षक : "मानव-श्रम का महत्व"।

(ii) विधाता की अनुपम रचना मनुष्य और उसका शरीर है जिससे जीवन को समृद्ध बना सकता है।

(iii) विधाता ने इस दुर्लभ तन को बनाया ताकि इसका हम सदुपयोग करें, लेकिन मनुष्य आलस्य, प्रमाद अथवा घटिया कामों में इसे गँवा देगा तो इसे विधाता के प्रति अन्याय करेंगे।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -18 अथवा

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला:

(i) रचनाएँ :- ① अनामिका
② गीतिका
③ परिमल
④ राम की शक्ति पूजा

(ii) भावपक्ष - कलापक्ष :-

① प्रकृति-चित्रण: निराला जी ने अपने काव्य में प्रकृति का अद्भुत मानवीयकरण किया है। बादल को प्रिय विषय बना कर उसमें श्रेष्ठ मनुष्य (क्रांतिकारी मनुष्य) की चेष्टाएँ की है।

② पूँजीवाद का विरोध: उन्होंने अपने रचनाएँ में निम्न व गरीब वर्ग को सहानुभूति और साहस प्रदान किया है। शोषकों का विद्रोह कर उनके सुख अस्थिर बताया है।

③ सैद्धान्तिक राष्ट्रीयता: उन्होंने राष्ट्र के प्रति अपने प्रेम को कविताओं मे व्यक्त किया है तथा सुखी व सम्पन्न समाज की कामना कर राष्ट्रीयता दिखाई है।

B S E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

कलापक्ष :-

① मुक्तत काव्य : निराला जी को मुक्तत काव्य का प्रवर्तक माना जाता है। मुक्तक छंद का प्रयोग का सजीव-चित्रण किया है।

② उन्होंने संस्कृत युक्त खड़ी बोली का प्रयोग किया है जिससे भाषा मे तत्सम व तद्भव के मिश्रण ने कविता का भाव स्पष्ट किया है।

(iii) साहित्य मे स्थान : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी रचनाएँ अनन्तकाल तक समाज को दिशा-निर्देश प्रदान करती है रहेगी। उनका साहित्य मे अद्वितीय योगदान है। उनकी कलाकृतियों से राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य निर्माण होगा वे संसार के अमर कवि है।

B
S
E

BOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक – 19

जैनेन्द्र कुमार :

(i) ① रचनाएँ ① परख
② फाँसी
③ नीलम देश की राजकन्या

(ii) भाषा-शैली : जैनेन्द्र जी ने सरल, जनसाधारण भाषा का प्रयोग किया है। आवश्यकता के अनुसार उर्दू-फारसी शब्द, मुहावरे व लोकोक्ति के प्रयोग ने भाषा को सजीव बना दिया है।

शैली : जैनेन्द्र कुमार जी ने अपने समय की अनेक शैलीयों का उपयोग कर अत्यंत मनोरम उपन्यास व निबंध लिखे है। भावात्मक शैली से भावो की अभिव्यक्ति हुई है और वर्णनात्मक शैली से वस्तु व घटनाओं का वर्णन हुआ है।

(iii) साहित्य मे स्थान :

जैनेन्द्र कुमार के निबंध व अन्य रचनाएँ युवाओ और समाज को बौद्धिक विकास मे सहायक रहेगी। उनका साहित्य सदा आभारी रहेगा। उनके विचार उनको हमेशा जीवित रखेंगी।

B
S
E

22 + =
याम पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 22 क अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक -22

संकेत : धूत ------- कोऊ।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-2' के पाठ 'कवितावली' से अवतरित है। इसके रचनाकार 'गोस्वामी तुलसीदास' जी है।

प्रसंग : तुलसीदास जी ने जाति जाति-पाँती का विरोध कर खुद को राम का सेवक बताया है।

भावार्थ : कवि तुलसीदास जी कहते है कि संसार उन्हे मक्कार कहे, संयासी कहे, राजपूत कहे जोलहा कहे कुछ भी कहे। उनको थोड़ो ना अपने पुत्रो का विवाह किसी की पुत्री से करना है, और नाहि ऐसा करके किसी की जाति बिगाड़-नी है। आगे तुलसीदास जी कहते है संसार उनको जो रूचि हो सो कहे, वे तो अपने आपको 'राम का गुलाम' मानते है। वो माँग कर खाते है मस्जिद मे सोते है। ना उनको किसी से एक लेना है ना किसी को दो देना है। वे राम भक्ति मे खुश है।

BSE

BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

काव्य-सौंदर्य :

① भक्ति रस का अत्यंत सुंदर चित्रण हुआ है। रामभक्ति दिखाई है।
② सवैया छंद का उपयोग हुआ है।
③ संसार की मोहमाया से दूर रहने की बात कही है।

प्रश्नक्रमांक -23

संकेत : रात्रि ---- ---- ---- जाती थी।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पुस्तक 'आरोह' के पाठ 'पहलवान की ढोलक' से लिया गया है। इसके रचनाकार 'फणीश्वर नाथ रेणु' है। यह कहानी विधा है।

प्रसंग :- लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज को गाँव के लिए संजीवनी बताया गया है।

व्याख्या : रात में सुनसान गाँव को सिर्फ पहलवान की ढोलक की आवाज ही चुनौती देती थी। पहलवान शाम से ठीक सुबह तक ढोलक बजाता था और हैजा और मलेरिया से पीड़ित लोगों को ऊर्जा देता था व उसकी आवाज अर्द्धमृत के लिए संजीवनी रूपी उपचार का काम करती थी। वृद्धों व बच्चों का कुश्ती का खेल अत्यंत मनोरम लगता था। मरे हुए लोगों में भी बिजली उत्पन्न हो जाती।

B
S
E

24

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

विशेष:

① अनेक शब्द-युग्म जैसे 'बूढ़े-बच्चे-जवान' आदि का प्रयोग हुआ है

② भाषा जनसाधारण व बोलचाल की है।

③ ढोल संस्कृति की कला को बढ़ावा मिला है।

B
S
E

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक – 20

सेवा में,

श्रीमान सचिव महोदय
भोपाल, मध्य प्रदेश

P.T.O

P.T.O

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक -20

सेवा में,

श्रीमान सचिव महोदय
माध्यमिक शिक्षा मण्डल
भोपाल (म.प्र.)।

विषय :- हाईस्कूल परीक्षा की अंकसूची की द्वितीय प्रति हेतु प्रार्थना-पत्र।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि प्रार्थी ने माध्यमिक शिक्षा मण्डल की हाईस्कूल परीक्षा 2023 उच्च अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है। मेरा अनुक्रमांक 135226xxxx है। महोदय मुझे नौकरी प्राप्त करने हेतु अंकसूची की आवश्यकता है लेकिन दुर्भाग्य-वश मेरी अंकसूची खो गई है।

अतः महोदय से निवेदन की मुझे अंकसूची की द्वितीय प्रति प्रदान करने की कृपा करें। पता संलग्न है मैं आपका हमेशा के लिए आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

दिनांक
25/02/25

प्रार्थी: अ.ब.स

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

B
S
E

प्रश्नक्रमांक - 2।

(i) वर्तमान युग एवं इन्टरनेट :

रूपरेखा : ① प्रस्तावना
② इन्टरनेट का अनेक क्षेत्रों मे योगदान
③ इन्टरनेट शिक्षा क्षेत्र मे
④ इन्टरनेट के हानिकारक प्रभाव
⑤ उपसंहार

① प्रस्तावना : वर्तमान युग में इन्टरनेट को देवता माना जा सकता है। इन्टरनेट के कारण आज जीवन अत्यंत सुखमयी व सरल हो गया। विभिन्न कार्य अब घर बैठे ऑनलाइन हो सकते हैं। इन्टरनेट का अर्थ विश्व भर में फैले बीछे कम्प्युटर्स के नेटवर्क (जाल) से। इन्टरनेट के कारण पुरी दुनिया आज एक ही परिवार का हिस्सा बन गई है।

② इन्टरनेट का अनेक क्षेत्रों मे योगदान : इन्टरनेट आज हर क्षेत्र मे अपनी भूमिका निभा रहा है। आज युवा घर से ऑनलाईन नौकरी कर सकता है तथा बेरोजगारी का समाधान बन गया है। आज किसान भी आधुनिक यंत्रो मे पीछे नही है। वह इन्टरनेट के माध्यम से अपनी फसल का दाम जान सकता है तथा उपचार हेतु कीटनाशक वगैरह मँगवा सकता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

इण्टरनेट के माध्यम से पुरे विश्व मे हम कही से भी सूचना का आदान-प्रदान कर सकते है। विश्व के हर कौने से हम परिचित है। आपातकालीन सुविधा इण्टरनेट के माध्यम से आसान हो गई। चिकित्सक। आज ऑनलाइन उपचार कर सकता है। कोई परीक्षा का हम ऑनलाइन आवेदन कर सकते है। आम-आदमी को अब लम्बी कतारो में खड़ा रहने की जरूरत नही।

(3) इण्टरनेट शिक्षा क्षेत्र मे : कोरोना काल विद्यार्थी को अपनी पढ़ाई के लिए बहुत नुकसान उठाना पड़ रहा था। लेकिन फिर समाधान इण्टरनेट था। विद्यार्थी अपने घर बैठे अध्ययन कर सकता था। आज विद्यार्थी के अनेक अवसर इण्टरनेट मे दिये है। वे अन्य कम्पीटिटीव परीक्षाओं की तैयारी कम मूल्य मे कर सकता है। गरीब निर्धन छात्र भी अब पढ़ाई कर सकता है।

29

पृष्ठ 29 के अंक = कुल अंक

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(4) इण्टरनेट के हानिकारक प्रभाव : इण्टरनेट ने जितना लाभ दिया है, उससे कई गुना अधिक इसके नुकसान है। साइबर क्राईम व ऑनलाईन ठगी के केस आज आम बात हो गई। निम्न गरीब वर्ग द्वारा जुटायी सारी धन-सम्पत्ति एक ओ.टी.पी. (OTP) से खाली हो सकती है। इण्टरनेट ने ~~युअ~~ युवाओं को नही छोड़ा है। अश्लीलता व नग्नता आज अपने चरम-सीमा पर है। युवा अपनी गरम ऊर्जा देश के बदले मोबाईल फोन को दे रहा है।

(5) उपसंहार : समझदारी इसी मे है कि हम इण्टरनेट का सदुपयोग करे जिससे एक कुशल राष्ट्र का निर्माण हो। इण्टरनेट मनुष्य द्वारा बनाई चीज है और वो उसी के हाथ मे है कि उसका कैसा उपयोग किया जाए। इसका व्यवस्थित प्रयोग भारतवर्ष को उज्जवल भविष्य प्रदान करना सकता है।

समाप्त

श्रीमती मीनाक्षी सारनो
उच्च माध्यमिक शिक्षक
V.No.-9510270
कन्या उ.मा.वि. झाबुआ